

मंत्र दीक्षा



जमो अरहंताणं, जमो सिद्धाणं, जमो आचरियाणं, जमो उवज्जायाणं, जमो लोए सब्बसाहूणं
एसो पंच जमोक्कारो, सब्बपावपणासणो, मंगलाणं च सब्बेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद



© 'युवालोक' अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

संस्करण : 2024

प्रतियां : 3,000

मूल्य : 15.00 रुपये

मुद्रक : पायोरार्ईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

मंगल संदेश

जीवन निर्माण और विकास के अनेक माध्यमों में एक छोटा किन्तु सशक्त माध्यम है “मंत्र”। मन को ऊर्ध्वमुखी वृत्तियों की ओर ले जाने वाली शब्द शक्ति “मंत्र” कहलाती है। “मंत्र” के प्रयोग का उद्देश्य होता है मन के भीतर छिपी हुई अनंत शक्तियों का विकास।

किसी भी “मंत्र” में शब्द का जितना महत्त्व है, उससे अधिक महत्त्व ध्वनि का है। ध्वनि का प्रकम्पन, भावना प्रकम्पन और प्राण धारा जब घुल-मिल कर एक हो जाती है, तभी कोई रूपान्तरण घटित होता है। इस दृष्टि से किसी भी “मंत्र” का जप करते समय उसके सही उच्चारण पर ध्यान केन्द्रित करना जरूरी है।

- * “मंत्र” न कोई जादू है, न कोई चमत्कार है और न ही अंध-विश्वास है। इसका पूरा विज्ञान है। मंत्र के जप से जो ध्वनि प्रवाह उत्पन्न होता है, वह आस-पास के वातावरण को विशेष रूप से स्पन्दित करता है।
- * “मंत्र दीक्षा” एक छोटा सा उपक्रम है। इसका उद्देश्य है बच्चों को महामंत्र से परिचित कराना और उसके प्रयोग से होने वाले लाभ का अनुभव कराना। नमस्कार महामंत्र के प्रभाव की अनेक घटनाएं प्रसिद्ध हैं। इसलिए विधिवत् नियमित रूप से घनीभूत आस्था के साथ अपनी सुषुप्त शक्तियों का जागरण करने के लिए इस मंत्र का जप बहुत उपयोगी है।

नमस्कार महामंत्र आबाल वृद्ध सबके लिए उपयोगी है। बच्चों को विशेष संस्कार देने के लिए मंत्र दीक्षा को एक संस्कार के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है, जिस प्रकार नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन आदि सोलह संस्कार माने गए हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक विकास के लिए कुछ निश्चित संस्कारों में यह एक है।

‘अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्’ द्वारा चलाए जा रहे इस मंत्र दीक्षा अभियान की गति में तीव्रता आए और समाज का हर बच्चा इस संस्कार से संस्कारित हो, यही शुभाशंसा है।

गणाधिपति श्री तुलसी

अपनी बात

आचार्य तुलसी ने जैन जीवन शैली को प्रतिपादित करते हुए सम्यक् ज्ञान को मानव जीवन का पथप्रदर्शक कहा है। इसके लिए सुसंस्कारों का प्रशिक्षण नितांत अपेक्षित है। वर्तमान में भौतिकता की चकाचौंध में हमारी संस्कृति के मूल तत्त्व धूमिल होते जा रहे हैं। बच्चों में निषेधात्मक चिंतन, उत्तेजना और तिरस्कार के भाव उग्र होते जा रहे हैं, संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसे में आवश्यकता है एक ऐसे सूत्र की जो बचपन से मार्गदर्शन करे, यौवन में साहस और आत्मविश्वास तथा बूढ़ापे में शांतिमय सहारा दे सके और वह सूत्र है— “नमस्कार महामंत्र”।

नमस्कार महामंत्र जैसे शक्तिशाली मंत्र के प्रति हमारी आस्था घनीभूत हो, सात्विक आचरण के प्रति आस्था का विकास हो तथा जीवन में नैतिक मूल्य प्रतिष्ठापित हों, इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ‘मंत्र दीक्षा’ का आयोजन किया जाता है।

वैज्ञानिक तथ्यों ने इस बात की पुष्टि की है कि पांच से नौ वर्ष की उम्र बच्चों के मानसिक विकास एवं आंतरिक आस्था के जागरण का समय है। दीक्षा के इस कार्यक्रम में बच्चों की मूलभूत आस्थाओं के साथ नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करवाया जाता है।

संस्कारों का जागरण महत्वपूर्ण है। बचपन में संस्कार आए इसी दृष्टि से माता-पिता व अभिभावकों को सजग रहना अपेक्षित है। साधु-साध्वियों के सम्पर्क में रहने से जागरण हो सकता है। संस्कार जागरण की दृष्टि से मंत्र दीक्षा अनिवार्य तत्त्व है।

बच्चे परमात्मा की सच्ची मूरत है।

प्यारी लगती सभी को इनकी सूरत है॥

हमेशा हंसते-खिलते रहें ये फूल।

इसलिए सतत सावधानी की जरूरत है॥

रमेश डागा

अध्यक्ष

अमित नाहटा

महामंत्री

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

मंत्र दीक्षा : क्यों ?

श्रद्धा जितनी मजबूत होती है, आदमी उतना ही आगे बढ़ता है। निश्चित श्रद्धा के अभाव में अनेक व्यक्ति अपनी जीवन ऊर्जा को निरर्थक गंवा देते हैं हम किसी भी सफल व्यक्ति का जीवन उठाकर देखें, उसकी सफलता का मूल मजबूत आस्था में ही मिलेगा। इसलिए यह उचित है कि बच्चों में प्रारंभ से ही दृढ़ आस्था का निर्माण किया जाए। माता-पिता तथा धार्मिक गुरुओं का यह कर्तव्य है कि वे अपनी संतान तथा अनुयायियों का मार्गदर्शन कर उन्हें सफल जीवन जीने योग्य बनायें।

श्रद्धा का सम्बन्ध ज्ञान और विश्वास से है और विश्वास के निर्माण का स्वर्णिम काल है— बचपन। आरम्भ के छः वर्षों में बच्चे के विचार की नींव पड़ जाती है। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता है वह नींव और अधिक मजबूत होती चली जाती है। इसलिए यह आवश्यक है कि इस अवस्था में ही बच्चे की आस्था का सुदृढ़ निर्माण किया जाए। कई वर्षों से यह प्रयत्न चल रहा है कि नौवें वर्ष में प्रवेश करने के साथ ही बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की जाए। यद्यपि इसकी जरूरत तो पहले भी थी पर आज बच्चों के लिए भटकाव के जितने अवसर हैं, उन्हें देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस उम्र में ही उन्हें सुस्थिर होने के अवसर उपलब्ध करवाया जाए।

मंत्र दीक्षा में बच्चों को जीवन की मूलभूत आस्थाओं के साथ-साथ नमस्कार महामंत्र का श्रवण/स्मरण कराया जाता है। नमस्कार महामंत्र

एक परम प्रभावक 'मंत्र' है। यदि बच्चा शुरु से ही इस महामंत्र पर अपनी आस्था जमा ले तथा मूलभूत आचार-व्यवहार पर अपने आपको केन्द्रित कर ले तो यह उसके अपने जीवन के लिए अति लाभदायक है। इस दृष्टि से अभिभावकों का यह पहला कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को मंत्र दीक्षा में दीक्षित करें।

- * अनुशासन में रहने वाला बच्चा विद्यार्जन में तो सफल होता ही है, उसमें दूसरे गुणों का भी विकास होता है।

— गणाधिपति श्री तुलसी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावपणासणो।

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

मंगल-पाठ

चत्तारि मंगलं

अरहंतां मंगलं, सिद्धा मंगलं

साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मों मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा

अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा

साहू लोगुत्तमा, केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि

अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि

साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

प्रभावक मंत्र

नमस्कार महामंत्र जैन परम्परा का एक प्रभावक मंत्र है। इस मंत्र के साथ अनन्त साधकों की साधना है। इसका नियमित अनुष्ठान और विधिपूर्वक प्रयोग करने से मानसिक शान्ति मिलती है।

जप से लाभ

- * जप करने वाले के पाप का बंध नहीं होता।
- * मन एकाग्र होता है।
- * अन्तर शक्ति का जागरण होता है।
- * सम्यक् आभामंडल बनता है।
- * आत्म-शोधन के साथ मनोकामना पूर्ण होती है।
- * असाध्य रोगों का शमन होता है।
- * दिव्य शक्तियां अनुकूल बनती हैं।
- * देवकृत उपद्रव प्रभावहीन हो जाते हैं।

मंत्र दीक्षा संकल्प

1. मैं प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र का कम से कम 21 बार जप करूंगा।
2. मैं शराब, मांस, अण्डों का सेवन नहीं करूंगा।
3. मैं बीड़ी, सिगरेट, पान-मसाला, जर्दा आदि का प्रयोग नहीं करूंगा।
4. मैं माता-पिता व गुरुजनों के प्रति विनम्र रहूंगा।
5. मैं गाली व अपशब्द का प्रयोग नहीं करूंगा।

शिक्षा सूत्र

1. प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व उठना चाहिये।
2. यथासंभव नियमित साधु-साध्वियों के दर्शन करने चाहिये।
3. नियमित आसन-प्राणायाम करना चाहिये।
4. खान-पान की शुद्धि रखनी चाहिये।
5. अच्छे साथियों की संगत में रहना चाहिये।

24-तीर्थकर

1. भगवान् ऋषभ प्रभु
2. भगवान् अजित प्रभु
3. भगवान् सम्भव प्रभु
4. भगवान् अभिनन्दन प्रभु
5. भगवान् सुमति प्रभु
6. भगवान् पद्म प्रभु
7. भगवान् सुपार्श्व प्रभु
8. भगवान् चंद्र प्रभु
9. भगवान् सुविधि प्रभु
10. भगवान् शीतल प्रभु
11. भगवान् श्रेयांस प्रभु
12. भगवान् वासुपूज्य प्रभु
13. भगवान् विमल प्रभु
14. भगवान् अनन्त प्रभु
15. भगवान् धर्म प्रभु
16. भगवान् शान्ति प्रभु
17. भगवान् कुंथु प्रभु
18. भगवान् अर प्रभु
19. भगवान् मल्लि प्रभु
20. भगवान् मुनि सुव्रत प्रभु
21. भगवान् नमि प्रभु
22. भगवान् अरिष्टनेमि प्रभु
23. भगवान् पार्श्वनाथ प्रभु
24. भगवान् महावीर प्रभु

आचार्य-परम्परा

1. आचार्यश्री भीखणजी
2. आचार्यश्री भारमलजी
3. आचार्यश्री रायचन्दजी (ऋषिराय)
4. आचार्यश्री जीतमलजी (जयाचार्य)
5. आचार्यश्री मघराजजी
6. आचार्यश्री माणकलालजी
7. आचार्यश्री डालचंदजी
8. आचार्यश्री कालूगणीजी
9. आचार्यश्री तुलसीजी
10. आचार्यश्री महाप्रज्ञजी
11. आचार्यश्री महाश्रमणजी

वंदन-पाठ

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि
सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

वंदन-विधि

सीधे खड़े-खड़े दोनों हाथ जोड़कर उन्हें दाएं से बाएं ले जाते हुए पुनः दाएं तक लाएं। इस प्रकार तीन बार प्रदक्षिणा दें। यह प्रदक्षिणा नाभि से मस्तक तक की जाए। तत्पश्चात् वंदन की मुद्रा में बैठकर 'वंदामि नमंसामि' से लेकर 'पज्जुवासामि' तक पूरे पाठ का स्पष्ट उच्चारण करें। 'मत्थएण वंदामि' पाठ बोलते समय श्वास भरें और उसे छोड़ते हुए मस्तक को नीचे जमीन तक झुकाएं। पुनः श्वास भरते हुए मस्तक को ऊपर उठाएं। इस विधि से तीन बार उठ-बैठकर वंदना करें और हाथ जोड़कर कहें— "वंदे गुरुवरं! आपके तनु रत्न में सुख साता है"।

सामायिक पाठ

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव-नियमं (मुहुत्तं एगं) पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि मणसा, वयसा, कायसा तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

सामायिक आलोचना

नोंवे सामायिक व्रत में जो कोई अतिचार-दोष लगा हो तो मैं उसकी आलोचना करता हूँ/करती हूँ—

1. मन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
2. वचन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
3. शरीर की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
4. सामायिक के नियमों का पूरा पालन न किया हो।
5. अवधि से पहले सामायिक को पूरा किया हो।

तस्स मिच्छामि दुक्कडं—

इनसे लगे मेरे पाप मिथ्या हों, निष्फल हों।

अर्हत्-वंदना

1. णमो अरहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।
2. एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावपणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।
3. जे य बुद्धा अइक्कंता, जे य बुद्धा अणागया।
संती तेसिं पइट्ठाणं, भूयाणं जगई जहा।।
4. से सुयं च मे, अज्झत्थियं च मे—
बंधपमोक्खो तुज्झ अज्झत्थेव।
5. पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं,
किं बहिया मित्तमिच्छसि ?
6. पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ,
एवं दुक्खा पमोक्खसि।।
7. पुरिसा! तुमंसि नाम सच्चेव,
जं हंतव्वं ति मन्नसि।
8. सव्वे पाणा ण हंतव्वा—
एस धम्मे धुवे, णिइए सासए।

9. पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाहि।
10. सच्चं भयवं।
11. सच्चं लोयम्मि सारभूयं।
12. इणमेव णिग्गंथं पावयणं सच्चं।
13. उट्ठिए णो पमायए।
14. सव्वतो पमत्तस्स भयं,
सव्वतो अपमत्तस्स णत्थि भयं।
15. समया धम्म मुदाहरे मुणी।
16. लाभालाभे सुहे-दुक्खे, जीविए-मरणे तथा।
समो निंदा-पसंसासु, तथा माणावमाणओ॥
17. अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ।
वासीचंदणकप्पो य, असणे अणसणे तथा॥
18. अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममितं च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ॥
19. अप्पा णई वेयरणी, अप्पा मे कूड़सामली।
अप्पा कामदुहा धेणु, अप्पा मे नंदणं वणं॥
20. जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एणं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ॥
21. खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई॥

22. अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं।
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं॥
23. अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा।
केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो॥
24. अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि।
साहू सरणं पवज्जामि, केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥

वंदना

- * भाव-भीनी वंदना भगवान-चरणों में चढ़ाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं॥
- * ज्ञान से निज को निहारें, दृष्टि से निज को निखारें।
आचरण की उर्वरा में, लक्ष्य-तरुवर लहलहाएं॥
- * सत्य में आस्था अचल हो, चित्त संशय से न चल हो।
सिद्ध कर आत्मानुशासन, विजय का संगान गाएं॥
- * बिन्दु भी हम सिन्धु भी हैं, भक्त भी भगवान भी हैं।
छिन्न कर सब ग्रंथियों को, सुप्त-चेतन को जगाएं॥
- * धर्म है समता हमारा, कर्म समतामय हमारा।
साम्ययोगी बन हृदय में, स्रोत समता का बहाएं॥

परमेष्ठी-वंदना

1. णमो अरहंताणं

वंदना आनंद पुलकित, विनय नत हो मैं करूं।
एक लय हो एक रस हो, भाव तन्मयता वरूं।।
सहज निज आलोक से भासित स्वयं संबुद्ध हैं।
धर्म-तीर्थकर, शुभंकर, वीतराग, विशुद्ध हैं।।
गति-प्रतिष्ठा, त्राणदाता, आवरण से मुक्त हैं।
देव अर्हन् दिव्य-योगज अतिशयों से युक्त हैं।।

2. णमो सिद्धाणं

बंधनों की शृंखला से मुक्त शक्ति-स्रोत हैं।
सहज निर्मल, आत्म-लय में सतत ओत-प्रोत हैं।।
दग्ध कर भव-बीज-अंकुर अरूज, अज, अविकार हैं।
सिद्ध परमात्मा परम ईश्वर अपुनरवतार हैं।।

3. णमो आयरियाणं

अमलतम आचार-धारा में स्वयं निष्णात हैं।
दीप सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं।।
धर्म-शासन के धुरंधर धीर धर्माचार्य हैं।
प्रथम पद के प्रवर प्रतिनिधि प्रगति में अनिवार्य हैं।।

4. णमो उवज्झायाणं

द्वादशांगी के प्रवक्ता, ज्ञान-गरिमा-पुंज हैं।
साधना के शांत उपवन में सुरम्य निकुंज हैं।।
सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा।
उपाध्याय महान श्रुतधर, धर्म-शासन-सम्पदा।।

5. णमो लोए सव्वसाहूणं

सदालाभ-अलाभ में, सुख-दुःख में मध्यस्थ हैं।
शांतिमय, वैराग्यमय, आनंदमय आत्मस्थ हैं।।
वासना से विरत आकृति, सहज परम प्रसन्न हैं।
साधना-धन साधु अंतर्भाव में आसन्न हैं।।

मंगल-स्मरण

- * मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं स्थूलिभद्राद्याः, जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।
- * सर्व-मंगल-मांगल्यं सर्व-कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व-धर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।
- * मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः।
मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसी गुरुः।
महाप्रज्ञोऽस्तु मंगलं, महाश्रमणोऽस्तु मंगलं।
तेरापंथोऽस्तु मंगलं।

महावीर स्तुति

जय महावीर भगवान

मन मन्दिर में आओ धरूं निरन्तर ध्यान।

1. पावन नाम तुम्हारा, मंत्राक्षर प्यारा। प्रभु...
मेरी स्वर-लहरी पर, उठे एक ही तान।
जय महावीर भगवान...
2. राग-द्वेष विजेता, सिद्धि-सदन नेता। प्रभु...
क्षमामूर्ति जग त्राता, मिटे सकल व्यवधान।
जय महावीर भगवान...
3. अनेकान्त उद्गाता, अनुपम सुखदाता। प्रभु...
जनम-जनम के बन्धन, तोड़े कर सन्धान।
जय महावीर भगवान...
4. आधि व्याधि की माया, मिटे प्रेत छाया। प्रभु...
आत्म-शक्ति जग जाए, लघु भी बने महान्।
जय महावीर भगवान...
5. भक्ति भरा मन मेरा, तोड़ रहा घेरा। प्रभु...
तन्मय बनकर 'तुलसी', करूं सदा संगान।
जय महावीर भगवान...

अर्ह-वंदना

अर्ह-अर्ह की वंदना फले।
जीवन विकास हो, मन में सुवास हो,
देखो दीपक से दीपक जले।।

विद्या के पावन मन्दिर में सच्ची शिक्षा हम पाएं
सदाचार के सुन्दर पथ पर कदम-कदम बढ़ते जाएं।
चाहे रात या प्रभात हो भले।

हम सारे हैं भाई-भाई, भ्रातृ भाव से सदा बढ़ें
अपना संयम अपने द्वारा अनुशासन का पाठ पढ़ें।
कभी कोई न हमको छले।

हम हैं अपने भाग्य विधाता, खुद अपना निर्माण करें,
विद्या और विनय के द्वारा, युग धारा में प्राण भरें।
श्रम के सांचे में जीवन ढले।

त्याग-तपस्या की सौरभ से मन-उपवन को महकाएं,
धर्म, समाज देश हित हम, सर्वस्व निछावर कर पाएं।
नित उजला प्रकाश निकले।

छात्र-प्रतिज्ञा

जीवन हम आदर्श बनाएं, उन्नति-पथ पर बढ़ते जाएं,
क्यों न छात्र गुण पात्र कहाएं, जीवन हम आदर्श बनाएं।

उच्च-उच्च आचरण वरेंगे, दुराचार से सदा डरेंगे,
आत्म शक्ति का परिचय देंगे, नहीं कहीं दुर्बलता लाएं।
जीवन हम आदर्श बनाएं।

संयम झूले में झूलेंगे, तत्त्व अहिंसा को छू लेंगे,
नहीं नम्रता को भूलेंगे, अनुशासन के नियम निभाएं।
जीवन हम आदर्श बनाएं।

नहीं किसी को गाली देंगे, नहीं किसी से घृणा करेंगे,
बोल जबान नहीं बदलेंगे, पद लोलुपता नहीं बढ़ाएं।
जीवन हम आदर्श बनाएं।

झूठ-कपट से सदा बचेंगे, जुआ-चोरी नहीं रचेंगे,
पर-निन्दा में क्यों रस लेंगे, आत्म-विजय ही लक्ष्य बनाएं।
जीवन हम आदर्श बनाएं।

मद्य-पान में नहीं पढ़ेंगे, भांग तम्बाकू से न भिड़ेंगे,
बुरी आदतों साथ लड़ेंगे, ईर्ष्या-मत्सर मान मिटाएं।

जीवन हम आदर्श बनाएं।

आस्तिकता को आश्रय देंगे, नास्तिकता न पनपने देंगे,
त्याग-मार्ग में तन-मन देंगे, सद्गुरु में श्रद्धा रख पाएं।

जीवन हम आदर्श बनाएं।

सहनशील बन वीर बनेंगे, सच्ची अच्छी सीख सुनेंगे,
धार्मिकता का पाठ पढ़ेंगे, 'तुलसी' अणुव्रत-पथ पर आएंगे।

जीवन हम आदर्श बनाएं।

घोष

- * तेरापथ की क्या पहचान।।
एक गुरु और एक विधान।।
- * तन-मन से हम करें प्रचार।।
जन-जन में जागे संस्कार।।
- * रखे हमेशा हम उपयोग।।
जय जिनेन्द्र का करें प्रयोग।।
- * निज पर शासन फिर अनुशासन।।

— गणाधिपति श्री तुलसी

भावना

हे दयालो! देव! तेरी शरण हम सब आ रहे,
शुद्ध मन से एक तेरा ध्यान हम सब ध्या रहे।

हे दयालो!

मोह मद ममता के त्यागी, वीतरागी तुम प्रभो!
हम भी उस पथ के पथिक हों, भावना यह भा रहे।

हे दयालो!

सद्गुरु में हो हमारी, भक्ति सच्चे भाव से,
धर्म-रग-रग में रमे, हरदम यही हम चाह रहे।

हे दयालो!

दिल में पापों के प्रति, प्रतिपल हमारी हो घृणा,
प्रेम हो सत्संग से यह, लालसा दिल ला रहे।

हे दयालो!

दूसरों की देख बढ़ती हो न ईर्ष्या लेश भी,
सर्वदा ग्राहक गुणों के, हो हृदय से गा रहे।

हे दयालो!

त्यागमय जीवन बितायें, शान्तिमय बर्ताव हो,
भाव हो समभाव तेरापंथ जो हम पा रहे।

हे दयालो!

मधुर वाणी

काग किसका लेत है, कोयल किसको देत।
मीठी बोली कारणें, जग अपनो कर लेत।

कौआ किसी का कुछ लेता नहीं है और न कोयल किसी को कुछ देती है पर कोयल की बोली सुनकर मन में प्रसन्नता होती है और कौए की बोली सुनकर अप्रसन्नता। कौए की कर्कश आवाज को कोई नहीं सुनना चाहता। इसी प्रकार जो बालक मधुर बोलते हैं, उनसे सभी बात करना चाहते हैं। सचमुच मधुर वाणी सभ्य व्यक्ति का लक्षण है, जो समाज असंस्कारी होता है उसके सदस्य ही कटु और अप्रिय वाणी बोलते हैं।

यह सम्भव है कि किसी मनुष्य के पास धन-दौलत न भी हो पर प्रिय वचनों का अटूट खजाना हो तो उसके पास सब कुछ है। जो व्यक्ति अपने अटूट खजाने को काम में नहीं लेता, वह धनवान होते हुए भी दरिद्र है। उससे बढ़कर और कौन मूर्ख हो सकता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में प्रिय वचन को सत्य वचन के बराबर माना गया है।

बहुत से बालक हंसी-मजाक में ऐसे भी वचन बोल देते हैं जिससे दूसरों का दिल दुखे। उन्हें दूसरों का दिल दुखाने में ही आनन्द आता है पर उन्हें याद रखना चाहिए कि यदि वे किसी का दिल दुखा सकते हैं तो दूसरा भी उनका दिल दुखा सकता है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में प्रिय वचन को सत्य वचन के बराबर माना गया है।

हर वचन का हमारे मन में संस्कार बैठता है। यदि हम प्रिय बोलेंगे तो हमारे मन में सुसंस्कार बैठेंगे और यदि हम अप्रिय बोलेंगे तो हमारे मन में कुसंस्कार बैठेंगे। इसलिए हम हर समय यह ध्यान रखें कि हमारे मुंह से ऐसा कोई भी शब्द न निकले जो किसी का दिल दुखाता हो।

अच्छा बच्चा वह कहलाता

सुबह-सुबह उठ सबसे पहले, महामंत्र को स्मृति में लाता,
नित्य कर्म से निवृत्त होकर, गुरु दर्शन का लाभ उठाता।

अच्छा बच्चा वह कहलाता।

दिनचर्या को रखता निश्चित, सबसे मृदु व्यवहार बनाता,
श्रमपूर्वक पढ़ता, कोई भी गलत काम करते सकुचाता।

अच्छा बच्चा वह कहलाता।

देखा-देखी कभी न करता, दुर्व्यसनों को दूर भगाता,
मुख से कड़वी बात न कहता, दिल में करुणा को सरसाता।

अच्छा बच्चा वह कहलाता।

सच्चाई को गले लगाता, दृढ़ साहस से कदम बढ़ाता,
सारे जीवन व्यवहारों में, सत्संस्कारों को अपनाता।

अच्छा बच्चा वह कहलाता।

चमत्कार

एक बार राजा श्रेणिक ने एक विशाल राजप्रसाद बनवाना चाहा। किन्तु ज्यों ही वह पूर्ण होने जाता, त्यों ही ढ़ह जाता। राजा ने ज्योतिषियों से पूछा कि अब क्या करना चाहिए? उन्होंने कहा— महाराज! इसके लिए एक बत्तीस लक्षण वाले पुरुष की बलि देनी होगी। राजा ने उसी समय ढ़िंढोरा पिटवाया कि जो कोई अपने पुत्र को हवन करने के लिए देगा उसे उसके बराबर सोना मिलेगा। भद्रा नाम की स्त्री ने पति के रोकने पर भी लोभ में पड़कर यह स्वीकार कर लिया और अपने किशोर बालक अमरकुमार को होम के लिए सौंप दिया।

रानी चेलना को जब यह मालूम हुआ तो उसने राजा को बहुत कुछ कहा-सुना पर राजा ने एक न मानी। रानी ने होम करने वालों को भी धमकाया पर वे अपनी बात पर डटे रहे। रानी सर्वथा निरुपाय होकर उस बिलखते हुए बालक के पास गई और ढाढ़स देती हुई कहने लगी— 'अमर कुमार'! इस तरह रोओ मत। धीरज रखो, सब ठीक होगा। लो मैं तुम्हें एक मंत्र बताती हूं उसका जप करो। उससे तुम्हारी रक्षा होगी, सुनते हो!

अमर कुमार— हां रानी जी! सुन रहा हूं! कौन सा मंत्र है वह?

रानी— लो सीखो। णमो अरहंताणं...

अमर कुमार— मैं इसे पहले से ही जानता हूं, मैंने यह साधुओं से सीखा था।

रानी— तो बस चिंता की कोई बात नहीं। आंसू पोंछ लो और स्थिर चित्त होकर असका जप करने लग जाओ।

कुमार को इससे बड़ा बल मिला। वह मंत्र का जप करने लग गया। होम करने वाले आये और ज्यों ही उसे अग्नि कुण्ड में ढकेलना चाहा, त्यों ही नमस्कार मंत्र के प्रभाव से अग्नि ठण्डी हो गई। वहां एक सिंहासन बन गया और होम करने वाले मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

राजा को जब यह मालूम हुआ तो वह दौड़ा-दौड़ा आया। वहां की स्थिति को देख कर उसे अचम्भा हुआ। उसने कुमार से राज्य करने के लिए आग्रह किया। अमरकुमार ने उत्तर देते हुए कहा— मैं जिसके प्रभाव से बचा हूं, उसकी शरण लूंगा। राज्य से मुझे कोई मतलब नहीं।

कुमार ने दीक्षा ली और आत्मा का कल्याण किया।

विनम्रता

उस समय भारत में राजा श्रेणिक राज्य करता था। उसके पास एक ऐसा बगीचा था, जिसमें बारह महीने आम लगे रहते थे। एक बार एक हरिजन को आमों की तीव्र आवश्यकता हुई पर उससे यह साहस नहीं हुआ कि राजा से आम मांग ले। उसे आशंका थी कि शायद राजा उसे आम न दे। उसके पास एक ऐसी विद्या थी जिससे वह दूर खड़ा रहकर भी आमों को तोड़ सकता था। अतः आम मांगने की अपेक्षा उसने विद्या के द्वारा ही आम तोड़ना शुरू कर दिया। राजा इस बात से बड़ा हैरान हुआ कि बगीचे में प्रतिदिन आम कम होते जा रहे हैं। उसने माली को चौकसी करने का कड़ा आदेश दिया पर फिर भी आम प्रतिदिन कम होते रहे। आखिर राजा ने अपने पुत्र अभयकुमार को चौकसी के लिए नियुक्त किया। चूंकि अभयकुमार बहुत होशियार राजकुमार था, अतः उसने हरिजन को रंगे हाथों पकड़ कर राजा के सामने उपस्थित कर दिया। राजा उसकी विद्या के दुरुपयोग से और अधिक नाराज हुआ। उसने हरिजन को सूली पर चढ़ा देने का दण्ड दिया।

अभयकुमार ने विचार किया यद्यपि हरिजन ने अपराध तो किया है पर उसकी पृष्ठभूमि को देखते हुए मृत्यु-दण्ड भारी पड़ता है। अतः उसने राजा से कहा— महाराज! आप उसे मृत्यु-दण्ड दें यह तो ठीक है पर इसकी मृत्यु के साथ हमारा राज्य भी इस विद्या से वंचित हो जायेगा। अतः अच्छा हो कि मृत्यु से पहले आप इस विद्या पर अपना अधिकार कर लें। राजा को यह सुझाव अच्छा लगा। अतः उसने हरिजन को विद्या सिखा देने का आदेश दिया। राजा सिंहासन पर बैठा हुआ था तथा हरिजन सामने दूर खड़ा-खड़ा उसे विद्या सिखा रहा था पर आश्चर्य की बात थी कि राजा उससे विद्या ग्रहण करने में सफल नहीं हुआ तो उसने अभयकुमार को अपना कारण पूछा। अभयकुमार ने कहा— ‘महाराज! आप विद्या तो ग्रहण करना चाहते हैं पर आपका मन अहंकार से मुक्त कहां हुआ है? विद्या देने वाला गुरु होता है। उसे जब तक उचित सम्मान नहीं दिया जाएगा, तब तक विद्या ग्रहित नहीं हो सकती।’ राजा को अपनी गलती ध्यान में आ गई। उसने हरिजन को सिंहासन पर बिठाया और स्वयं उसके सामने बैठकर विद्या ग्रहण करने लगा। थोड़े ही समय में विद्या उसके हस्तगत हो गई और राजा ने उसके अपराध को क्षमा भी कर दिया।

किसी ने ठीक ही कहा है— विनयात् याति पात्रताम्।

विनय से व्यक्ति में सदगुणों को प्राप्त होने की पात्रता आती है।

सचमुच मनुष्य जितना नम्र होता है, वह उतना ही ऊंचा उठता है।
नम्रता से उसका कुछ घटता नहीं है, अपितु उससे व्यक्तित्व में कुछ
निखार ही आता है।

सहज सुघड़ व्यवहार हो और उदार विचार॥

आवश्यक इसके लिए, जागे शुभ संस्कार॥

प्राणर्पण से भी मिले, तो लें शुभ संस्कार॥

इससे बढ़कर है नहीं जीवन का आधार॥

— गणाधिपति श्री तुलसी

सरलता का प्रभाव

कभी-कभी सरलता से कही गई बात का इतना प्रभाव होता है कि बड़ी से बड़ी बुराई भी उखड़ जाती है। एक बार की बात है, अरब देश का एक ग्रामीण लड़का एक कबीले के साथ पढ़ने के लिए शहर जा रहा था। बच्चे का पिता मर चुका था। अतः प्रस्थान करते समय उसकी मां ने उसकी व्यवस्था के लिए कुछ मोहरें उसके कपड़ों में सिल दी और कहा— ‘शहर जाकर तुम खूब मन लगाकर पढ़ना, कभी झूठ मत बोलना, जब भी आवश्यकता हो तो मोहरों को बेच कर अपना काम चला लेना।’

बच्चा मां की सीख लेकर चल पड़ा। रास्ते में डाकुओं ने कबीले को घेर लिया तथा उसके पास जो कुछ था उसे लूट लिया पर उन्हें बच्चे के कपड़ों में सिली हुई मोहरों का पता नहीं लगा। अतः वे बच्चे के पास ही बच गईं। सब कुछ छीन लेने के बाद अन्त में डाकुओं ने कहा— ‘किसी के पास अगर कुछ और धन हो तो यहां रख दें।’ बच्चा झट से आगे आया और अपने कपड़ों में सिली हुई मोहरें डाकुओं को दिखाते हुए बोला— ‘मेरे पास ये है।’

डाकू बालक की सरलता से मुग्ध हो गए। वे सोचने लगे— यदि बच्चा

हमें नहीं कहता तो हमें पता ही नहीं चलता कि उसके पास मोहरें हैं पर इसने हमें स्वयं ही बता दिया। अतः उन्होंने उससे पूछा— ‘तुमने हमें ये मोहरें क्यों बताईं।’ बालक ने सरलता से कहा— ‘जब मैं अपने घर से रवाना हुआ तो मेरी मां ने कहा था, ‘कभी झूठ मत बोलना’। अतः मैंने आपके सामने सारी बात सच-सच बता दी।’ डाकू बालक की सरलता को देख कर स्तम्भित रह गए। उन्होंने सोचा— कहां हम हैं, जो दिन भर डाका डालते हैं और कहां यह छोटा बालक है जो अपनी मां की सीख मानकर झूठ भी नहीं बोलता। उनका हृदय परिवर्तन हो गया। उन्होंने सारे कबीले का धन-माल तत्काल वापिस कर दिया तथा आगे से डाका डालना छोड़ दिया। यह सरलता और सत्य का प्रभाव है।



- * जिस बालक का जीवन सादा और विचार ऊंचे होंगे, वह अपने भविष्य में उतनी ही अधिक प्रगति कर सकेगा।

— गणाधिपति श्री तुलसी

संस्कार सप्तक

1. कितना जीवन कीमती, बड़े गर्व की बात।
“तुलसी” अब अंकन करें, जैसी निज औकात॥
2. जानूं जीव-अजीव मैं, पुण्य-पाप की बात।
आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध-मोक्ष विख्यात॥
3. अस्तिकाय हैं पांच ही, जीवों की छः काय।
मैं जानूं निज नाम सम, तुलसी शांत कषाय॥
4. “तुलसी” करणी जैसी भरणी, सुख-दुख स्वयं मिलेगा।
बोया बीज आकड़े का, फिर कैसे आम फलेगा॥
5. दर्शन, ज्ञान, चरित्रमय, तीन रत्न अमोल।
इष्टदेव, गुरु, धर्म त्रय, “तुलसी” तत्त्व अमोल॥
6. आर्य भिक्षु का मैं चेला हूं, तेरापंथी जैन हूं।
महाश्रमण हैं सदगुरु मेरे, मैं पहले गुडमैन हूं॥*
7. विश्रुतविभा हैं साध्वीप्रमुखा, श्री भैक्षव शासन सुखकार।*
वंदनीय सब साधु-साध्वियां, विनयभाव से ऊठ सवार॥

— गणाधिपति श्री तुलसी

* नोट :- मूल पद्य में अपेक्षानुसार परिवर्तन किया गया है।

आयोजकों से

- * मंत्र दीक्षा के लिए आषाढी पूर्णिमा (तेरापंथ स्थापना दिवस) निर्धारित है। अथवा बाद में निकटतम रविवार।
- * मंत्र दीक्षा सामग्री अभातेयुप केन्द्रीय कार्यालय से प्राप्त करें।
- * नौवे वर्ष में प्रवेश करने वाले बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करवाएं जाएं।
- * मंत्र दीक्षा के कार्यक्रम में अन्य जैन व जैनतर बालक-बालिकाएं अपनी स्वेच्छा से संभागी बन सकते हैं।
- * मंत्र दीक्षा के संकल्प स्वीकार करने वाले बालक-बालिकाओं को प्रतिदिन प्रातः **21 बार नमस्कार महामंत्र** के उच्चारण का संकल्प कराया जाए।
- * मंत्र दीक्षा लेने वाले बालक-बालिकाओं का स्थानीय स्तर पर नामांकन एवं डाटाबेस तैयार हो तथा वह रिकॉर्ड में रहे।
- * जिन बालक-बालिकाओं ने एक बार मंत्र दीक्षा का संकल्प स्वीकार कर लिया है, उसको दोबारा संकल्प कराने की अपेक्षा नहीं है।
- * पूर्व मंत्र दीक्षा संकल्पित बालक-बालिकाओं को उनके द्वारा ग्रहण किए गए संकल्पों की नियमित अनुपालना हेतु प्रेरित करें।
- * चारित्रात्माओं का सान्निध्य प्राप्त करें।
- * संस्कारक के रूप में इस विधि के विशेषज्ञ व्यक्तिओं को आमंत्रित करें।
- * संकल्पित बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा सामग्री अवश्य दें।

आयोजन की रूपरेखा

- * त्रिपदी वंदना से प्रारम्भ करें।
- * सरल भाषा में मंत्र दीक्षा की उपयोगिता समझाएं।
- * कथानक के माध्यम से नमस्कार महामंत्र का महत्व बताएं।
- * नमस्कार महामंत्र का एक-एक पद बोलकर बच्चों को पुनः उच्चारित करवाएं।
- * पांच संकल्प दिलाएं।
- * दीक्षान्त प्रवचन (आमंत्रित विशिष्ट व्यक्ति/चारित्रात्मा)।
- * मंगल पाठ।
- * घोष उच्चारित कराएं।

